HINDI

(Compulsory)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in HINDI (Devanagari script) unless otherwise directed in the question.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

1. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर *600* शब्दों में निबन्ध लिखिए : 100

(a) युवाओं में बढ़ता तनाव

(b) असफलता सफलता पाने का अगला कदम है

(c) क्या पढ़ने की आदत में गिरावट आ रही है?

(d) समाज में अंधविश्वासों से चलता संघर्ष

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट, सही और संक्षिप्त भाषा में दीजिए : 12×5=60

रिपोर्ट्स बताती हैं कि भारत के कॉलेजों से आने वाले 80 प्रतिशत लोग रोजगार के अयोग्य हैं। युवा-पीढ़ी के सम्पर्क में रहने वालों में से एक, मैं किन्तु सिर्फ इन आँकड़ों से असहमत होऊँगा। युवाओं से सम्पर्क के आधार पर मैं केवल इतना कह सकता हूँ कि उनमें करीब 90 प्रतिशत इसलिए रोजगार के अयोग्य हैं क्योंकि वे एकदम अनिश्चित व अनुत्तरदायी हैं। युवा लोग, कहीं पार्श्व में रहते हुए गलतियों की शुरुआत गलत-व्यवहार से भरे विश्वास के साथ करते हैं। वे बहुत पैसा तो बनाना चाहते हैं किन्तु बिना कुछ किए हुए ही। ऐसा नहीं है कि वे बेकार हैं, अधिकांश अच्छी अंग्रेजी बोलते हैं और अपने बारे में विश्वास से भरे हैं। वे नवीनतम रिंगटोन्स, फिल्मों और चुटकुलों के जानकार हैं लेकिन जैसे ही कोई थोड़ा आगे बढ़ता है तो वे अपनी रिक्त आँखों से मुझे घूरने लगते हैं। वे बहुत पैसा कमाना चाहते हैं, जिसके लिए मीडिया-हाइप और नियमित प्रकाशित होने वाले वेतन-सर्वों को धन्यवाद, लेकिन उनके पास वो दक्षता नहीं है जो कि उनको इस प्रकार से पैसा अर्जन करने में मदद करे। उनकी डिग्री का लिहाज करते हुए स्नातक-स्तर के विषयों के कुछ प्रश्न पूछें, उनमें से अधिकांश एकदम हकलाने-से लगते हैं। और, अतिरिक्त पढ़ाई के विषय में, कोई भी किसी निष्कर्ष को नहीं पढ़ पाता हैं। लेकिन यहाँ कुछ और प्रश्न भी हैं। सदाचार और व्यवहार के बारे में प्रश्न, आप में क्या अच्छा है, आप अपना अतिरिक्त समय कैसे व्यतीत करते हैं, और तब ये आश्वस्त लड़के व लड़कियों के समूह मेरे को इस संशय से ग्रस्त दिखलाई पड़ते हैं—''मुझे इन प्रश्नों का क्या उत्तर देना चाहिए?'' उनको यह कहना उचित नहीं है कि यह उनकी अपनी जिंदगी है और उनको अपने बारे में मुझे बतलाना चाहिए, क्योंकि वो हमेशा बने-बनाए तैयार उत्तर देना चाहते हैं, ऐसा कहना जो उनको सहायता देते हुए इससे मुक्त करे। वे कहते हैं कि—''यदि मैं यह अभ्यास पर्याप्त मात्रा में करूँ, तो मैं ऐसा जरूर सिद्ध करूँगा।'' इस तरह युवा लोग रातोंरात लोलुप पाठक, गिटार-वादक, स्टार-बल्लेबाज और यहाँ तक कि अभिनेता तक हो जाते हैं। मुझे आश्चर्य है यदि कोई नासमझ भेंटकर्ता उनकी आधी-अधूरी कहानियों पर विश्वास करे।

चूँकि, भारत आगे बढ़ रहा है, हमारे पास एक ऐसी लापरवाह पीढ़ी तैयार खड़ी है, जिसका एकमात्र लक्ष्य बिना कुछ किए एक अच्छी जिंदगी जीना है। ऐसा प्रतीत होता है कि हम मुलम्मा चढ़ी ऐसी फौज निर्मित कर रहे हैं, जो बिना कुछ दर्शन, बिना वचनबद्धता या सदाचार से भरी है। अपनी चमड़ी को बचाने और कुछ उपयुक्त करने में से किसी एक का चुनाव करने को कहने पर, अधिकांश युवाओं का जवाब दरअसल में अपने को बचाने का ही होगा। ऐसा माना जाता है कि जब हम युवा होते हैं तो हमारे अंदर कुछ आदर्शवाद विद्यमान होता है, हमारे विचार कुछ समझ नहीं निर्मित कर पाते किन्तु हम किसी प्रयोजन के प्रति खड़े होने के इच्छुक तो रहते हैं। आजकल के युवाओं में किसी प्रयोजन के प्रति कोई भावावेश नहीं होता। इस पीढ़ी के अत्यंत पूर्वाभ्यास से विनिर्मित उत्तरों को सुनकर मैं समझता हूँ कि नया मंत्र पैसा है। इसके अलावा यदि कोई कुछ और महत्त्वपूर्ण बातें कहता है, तो वो पुरातन है।

(a) वे क्या वजहें हैं, जिनके कारण युवा रोजगार के अयोग्य हैं?

(b) आज का युवा लेखक से क्या चाहता हैं?

(c) लेखक के अनुसार वर्तमान युवा पीढ़ी का एकमात्र प्रयोजन क्या है?

(d) आज के युवा के बीच विचारणीय नया मंत्र क्या है?

(e) वर्तमान युवा पीढ़ी का आदर्शवाद के प्रति क्या नजरिया है?

3. निम्नलिखित गद्यांश का संक्षेपण (Précis) एक-तिहाई शब्दों में लिखिए। शीर्षक देने की आवश्यकता नहीं हैं। संक्षेपण अपनी भाषा में लिखा जाना चाहिए : 60

रक्षा क्षेत्र में विदेशों पर निर्भरता कम करना और आत्मनिर्भरता प्राप्त करना सामरिक और आर्थिक दोनों कारणों से आज यह एक विकल्प के बजाय एक आवश्यकता है। सरकार ने अतीत में हमारे सशस्त्र बलों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आयुध निर्माणियों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के रूप में उत्पादन क्षमताओं का निर्माण किया। हालाँकि, विभिन्न रक्षा उपक्रमों के उत्पादन की क्षमताओं को विकसित करने के लिए भारत में निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ाने पर जोर देने की आवश्यकता है। विभिन्न वस्तुओं के निर्माण को बढ़ावा देने के लिए 'मेक इन इंडिया' जैसी एक महत्त्वपूर्ण पहल की गई है। अन्य वस्तुओं की अपेक्षा रक्षा उपकरणों के घरेलू उत्पादन की अधिक जरूरत है, क्योंकि इनसे न केवल बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की बचत होगी, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा चिन्ताओं को भी दूर किया जा सकेगा।

रक्षा क्षेत्र में सरकार ही एकमात्र उपभोक्ता है। अतः 'मेक इन इंडिया' हमारी खरीद नीति द्वारा संचालित होगी। सरकार की घरेलू रक्षा उद्योग को बढ़ावा देने की नीति, रक्षा खरीद नीति में अच्छी तरह परिलक्षित होती है। जहाँ 'बाइ इंडियन' तथा

'बाइ एंड मेक इंडियन' श्रेणियों का बाइ ग्लोबल से पहले स्थान आता है। आने वाले समय में आयात दुर्लभ से दुर्लभतम होता जाएगा और जरूरी व्यवस्था के निर्माण और विकास के लिए सर्वप्रथम अवसर भारतीय उद्योग को प्राप्त होगा। भले ही भारतीय कंपनियों की वर्तमान में प्रौद्योगिकी के मामले में पर्याप्त क्षमता न हो, उन्हें विदेशी कंपनियों के साथ संयुक्त उद्यम, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की व्यवस्था और गठबंधन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

अब तक रक्षा क्षेत्र में घरेलू उद्योग के प्रवेश के लिए लाइसेंस और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रतिबंध आदि को लेकर कई बाधाएँ थीं। रक्षा विनिर्माण क्षेत्र में निवेश की प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए अब कई नीतियों को उदार बनाया गया है। सबसे महत्त्वपूर्ण रक्षा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा देने के लिए एफ० डी० आइ० नीति को उदार बनाया गया है। लाइसेंस नीति को भी उदार बनाया गया है और अब घटकों, हिस्से-पुर्जों, कच्चा माल, परीक्षण उपकरण, उत्पादन मशीनरी आदि को लाइसेंस के दायरे से बाहर रखा गया है। जो कंपनियाँ इस तरह की वस्तुओं का उत्पादन करना चाहती हैं, अब उन्हें लाइसेंस की जरूरत नहीं होगी।

रक्षा क्षेत्र में घरेलू और विदेशी दोनों निवेशकों के लिए एक बड़ा अवसर उपलब्ध है। एक तरफ जहाँ सरकार निर्यात, लाइसेंसिंग, एफ० डी० आइ० सहित निवेश और खरीद के लिए नीति में जरूरी बदलाव कर रही है, वहीं उद्योग को भी जरूरी निवेश और प्रौद्योगिकी के मामले में उन्नयन करने की चुनौती को स्वीकार करने के लिए सामने आना चाहिए। रक्षा एक ऐसा क्षेत्र है जो नवाचार से संचालित होता है और जिसमें भारी निवेश और प्रौद्योगिकी की आवश्यकता है। लिहाजा उद्योग को भी अस्थायी लाभ के बजाय लंबी अवधि के लिए सोचने की मानसिकता बनानी होगी। हमें अनुसंधान विकास तथा नवीनतम विनिर्माण क्षमताओं पर ज्यादा ध्यान देना होगा। सरकार, घरेलू उद्योग हेतु एक ऐसी पारिस्थितिकी प्रणाली विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है जिससे वह सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में बराबर के स्तर पर व्यावसायिक उन्नति कर सके।

4. निम्नलिखित गद्यांश का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 20

अरब देश का ज्यादा हिस्सा रेगिस्तान है। यहाँ चारों ओर रेत और चट्टानें हैं। रेत या बालू इतनी गर्म होती है कि दिन में नंगे पाँव आप उस पर चल नहीं सकते। रेगिस्तान में इधर-उधर पानी के चश्मे हैं, जो बहुत ही नीचे धरती पर उभरे हुए हैं, वे इतने नीचे हैं कि सूरज भी उन्हें नहीं सोख सकता। हैं तो वे चश्मे बहुत कम परन्तु जहाँ भी कोई एक है वहाँ पेड़ लम्बे उगते हैं और बेहद सुन्दर दिखाई देते हैं, चश्मे के चारों ओर छायादार हरी अमराई बनाते हुए। ऐसी जगहों को मरूद्यान (ओएसिस) कहते हैं।

अरबवासी जो शहरों में निवास नहीं करते बरस-भर रेगिस्तान में ही रहते हैं। वे तम्बुओं में रहते हैं, जो आसानी से गाड़े और उखाड़े जा सकते हैं, ताकि वे एक नखलिस्तान से दूसरे नखलिस्तान की ओर अपनी भेड़ों, बकरियों, ऊँटों और घोड़ों के लिए घास-पानी की खातिर जा सकें। रेगिस्तानवासी अरब खूब पकी हुई अंजीरें और खजूर खाते है, जो खजूर के पेड़ों पर उगते हैं। वे उन्हें सुखाते हैं और फिर पूरे बरस खाद्य पदार्थ के रूप में उनका उपयोग करते हैं।

इन अरबवासियों के पास संसार के सर्वोत्तम घोड़े हैं। एक अरबवासी अपने सवारी घोड़े के कारण खुद को गौरवान्वित महसूस करता है और घोड़े को अपनी पत्नी और बच्चों जैसा ही प्यार करता है। ऊँट तो उसके खूबसूरत घोड़े से भी ज्यादा उपयोगी है, बहुत विशाल और ताकतवर भी। एक ऊँट लगभग दो घोड़ों से ज्यादा असबाब ढो सकता है। अरब लोग अपने ऊँटों को सामान से खूब लादते हैं और रेगिस्तान में मीलों मील सवारी भी करते हैं। मानों वह सच में 'रेगिस्तान का जहाज' हो। अक्सर उसे ऐसा ही पुकारा जाता है।

5. निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 20

Language and communication are something that children learn by talking to one another. But schools consider this an act of indiscipline. Instead, we have a special grammar class to learn language! One educationist remarked, "It is nice that children spend just a few hours at school. If they spend all 24 hours in schools, they will turn out to be dumb!" In most schools, teachers talk, children listen. The same is true for other skills also. Children learn a great deal without being taught, by tinkering and pottering on their own.

Changes in the school system, if they are to be of lasting significance, must spring from the actions of teachers in their classrooms, teachers who are able to help children collectively. New programmes, new materials and even basic changes in organizational structure will not necessarily bring about healthy growth. A dynamic and vital atmosphere can develop when teachers are given the freedom and support to innovate. One must depend ultimately upon the initiative and respectfulness of such teachers and this cannot be promoted by prescribing continuously and in detail what is to be done.

In education, we can cry too much about money. Sure, we could use more, but some of the best classrooms and schools I have seen or heard of, spend far less per pupil than the average in our schools today. We often don't spend well what money

we have. We waste large sums on fancy buildings, unproductive administrative staff, on diagnostic and remedial specialists, on expensive equipment that is either not needed, or underused or badly misused, on tons of identical and dull textbooks, readers and workbooks, and now on latest devices like computers. For much less than what we do spend, we could make our classrooms into far better learning environments than most of them are today.

6. *(a)* निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 2×5=10

(i) अक्ल पर पत्थर पड़ना

(ii) आस्तीन का साँप

(iii) उन्नीस-बीस का अंतर होना

(iv) हवाई किले बनाना

(v) दाल में काला होना

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए : 2×5=10

(i) हम कॉलेज जाऊंगा।

(ii) प्रातःकाल सूरज उगता है।

(iii) वह अपने माता-पिता का इकलौता संतान है।

(iv) उसने कल मुझे गाली दिया।

(v) नौकर आटा पिसा लाया।

(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए : 2×5=10

(i) बेटी

(ii) गंगा

(iii) सोना

(iv) हवा

(v) तलवार

(*d*) निम्नलिखित युग्मों को इस तरह से वाक्य में प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए और उनके बीच का अंतर भी शब्दार्थ में लिखित रूप में वर्णित हो : 2×5=10

(*i*) अविरल–अविकल

(*ii*) रंग–रंक

(*iii*) मैला–मेला

(*iv*) नीर–नारी

(*v*) परिणाम–परिमाण

★ ★ ★